IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, April 2024

मोहरवा कोठार में महिलाओं का मतदान व्यवहार एक अध्ययन; (रीवा जिले के सेमरिया तहसील के विशेष संदर्भ में)

डॉ. शकुन शुक्ला[1] व मंजुला द्विवेदी[2]
प्राध्यापक ६ विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग (सेवानिवृत्त),
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालयए भोपाल, मध्य प्रदेश[2]
शोधार्थी, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालयए भोपाल, मध्य प्रदेश[1]

शोध सारांश– प्रजातंत्र या लोकतंत्र ऐसी शासन प्रणाली है, जिसमें जनहित सर्वोपरि है, प्रजातंत्र का अर्थ केवल शासन प्रणाली तक सीमित नहीं है यह राज्य व समाज का रूप भी है अतः यह राज्य समाज व शासन तीनो का मिश्रण है।
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोकतंत्र को सर्वाधिक वैधता प्राप्त करने वाली शासन प्रणाली के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। चुनावी लोकतांत्रिक शासन तंत्र की आत्मा है। लोकतंत्र की वास्तविक क्षमता और सशक्तता नागरिकों की सक्रिय सहभागिता और सचेतना पर निर्भर है, मतदान व्यवहार प्रत्येक देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक मतदाता के रूप में नागरिक राजनीतिक सहभागिता करते समय वह विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है, कोई मतदाता ऐसे विभिन्न कारकों से प्रभावित होकर ही अपना राजनीतिक व्यवहार निर्धारित करता है, और उसके इसी व्यवहार को मतदान व्यवहार कहते हैं।

शब्द कुंजी– लोकतंत्र, मतदान व्यवहार, राजनीति, चुनाव, लोकतांत्रिक, निर्वाचन, मतदाता, प्रतिनिधि।

प्रस्तावना–लोकतंत्र दो शब्दों से मिलकर बना है, "लोक + तंत्र" लोक का अर्थ है जनता तथा तंत्र का अर्थ है शासन। यद्यपि शब्द का प्रयोग राजनीतिक संदर्भ में किया जाता है, किंतु लोकतंत्र का सिद्धांत दूसरे समूहों और संगठनों के लिए भी संगत है। **अब्राहम लिंकन** के शब्दों में, "लोकतंत्र जनता की, जनता के द्वारा और जनता के लिए सरकार है।"

निर्वाचन –निर्वाचन का सीधा सादा अर्थ है प्रतिनिधियों के चयन की प्रक्रिया। यह किसी राज्य में मतों के आधार पर प्रतिनिधियों के निर्धारण की व्यवस्था है। इसके द्वारा मतदाता इस तथ्य को अभिव्यक्त करते हैं कि वे किस प्रकार के प्रतिनिधियों को अपने शासक के रूप में चाहते हैं।

मतदान व्यवहार –मतदाताओं का मतदान व्यवहार सार्वजनिक चुनावों के परिणाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मतदान व्यवहार एक राजनीतिक के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक अवधारणा है।
मतदान व्यवहार का आशय मतदाता के मत देने तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन से है, अर्थात एक मतदाता अपने मतदान का प्रयोग करते समय किन तत्वों से प्रभावित होता है, मतदान व्यवहार का अध्ययन और विश्लेषण एक कठिन कार्य है, क्योंकि यह विविध प्रकार के बाध्य व आंतरिक कारकों से प्रभावित होता है।

कार्ल जे.फ्रेडरिक – यह प्रजातांत्रिक शासन को वैधता प्रदान करने की प्रक्रिया है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-17977

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, April 2024

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक –

भारत एक विकासशील देश है। विकासशील देशों में सामाजिक, आर्थिक कारकों पर अधिक बल दिया जाता है, जहां केंद्र सरकार के चुनाव व राज्य सरकार के चुनाव में भी मतदाताओं का व्यवहार भिन्न–भिन्न होता है, मतदान व्यवहार के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु यह जानना होता है कि मतदाता मतदान के समय किस तथ्य से सर्वाधिक प्रभावित रहता है। भारतीय मतदाताओं का मतदान समय समय पर बदलता रहता है। भारत में लोकसभा व उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न प्रदेशों के विधानसभा व अन्य स्थानीय चुनावों में भी ये कारक अपनी भूमिका का निर्वाहन करते रहे हैं। भारत में लोकसभा और विभिन्न विधानसभाओं के चुनावों में यह कारक अपनी भूमिका निर्वाहन करते हैं। मतदाताओं का मतदान व्यवहार विभिन्न प्रकार के तत्वों से प्रभावित होता है –

(1). जातिवाद –भारत की राजनीति जातिवादी है यहां की सामाजिक संरचना जाति व्यवस्था से अधिक प्रभावित है। इसीलिये भारतीय निर्वाचन प्रणाली में इसका प्रभाव होता है। जातिवाद का अधिकतम प्रभाव बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और केरल में देखने को मिलता है। किसी भी स्तर का चुनाव हो उसमें उम्मीदवार जिस जाति का रहता है तो उस जाति के मतदाताओं का झुकाव अपनी जाति के उम्मीदवार की ओर स्वाभाविक रूप से पाया जाता है। जैसा कि 1971 में लोकसभा चुनाव और 1972 का विधानसभा चुनाव में देखने को मिलता है।

(2). धर्म –भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है यह सभी धर्मों को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है, तथा सभी धर्मों के साथ समानता का व्यवहार करता है। मतदाताओं का यह मानना है कि उनके धर्म का उम्मीदवार उनके धर्म की रक्षा करेंगे, साथ ही संस्कृति और आर्थिक हितों की रक्षा करेंगे, धर्म एक महात्वपूर्ण कारक है जो मतदान का स्वरूप निर्धारित करता है।

(3). भाषा –राजनीति में भाषा का चुनावी मुद्दा रहा है, मतदान व्यवहार में भाषा को प्राथमिकता दिया गया है, विशेष रूप से तमिलनाडु की राजनीति में भाषा का मुद्दा अत्यन्त प्रभावी रहता है। इस प्रकार भाषा मतदाताओं के मतदान व्यवहार को निर्धारित करने वाला महत्त्वपूर्ण कारक माना गया है। भाषा मतदान व्यवहार के निर्धारक के रूप में काम करती है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में भी भाषा राजनीति का हिस्सा बन जाती है।

(4). क्षेत्रवाद –क्षेत्रवाद राष्ट्रीय हितों की तुलना में क्षेत्रीय हितों को अधिक महत्व प्रदान करता है। भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के विकास दौर में क्षेत्रवाद का तीव्र गति से विकास हुआ। उत्तर भारत, दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर की राजनीति में क्षेत्रवाद का मुद्दा बहुत अधिक प्रभावी होता है।

(5). आर्थिक स्थिति –भारतीय समाज आर्थिक दृष्टिकोण से एक विषमताग्रस्त समाज है जिन मतदाताओं की आर्थिक स्थिति कामजोर होती है, ऐसे मतदाताओं को चुनाव के समय प्रत्याशियो व राजनीतिक दलों द्वारा धन का लोभ देकर आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है और उनके मतों को प्रलोभन देकर खरीदने की कोशिश की जाती है।

(6). राजनीतिक दल –लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में चुनावी प्रक्रिया से संबंधित समस्त गतिविधियों के संचालन में तथा चुनाव परिणाम के उपरान्त सरकार के निर्माण में राजनीतिक दलों की भूमिका होती है। भारत में मतदाताओं का एक वर्ग अपनी दलीय पहचान रखता है, परिणाम स्वरूप विभिन्न चुनाव में मतदान व्यवहार विभिन्न राजनीतिक दलों के पक्ष में निरंतर परिवर्तनशील होता रहता है, इस प्रकार राजनीतिक दल व स्थायित्व मतदान व्यवहार का एक महात्वपूर्ण कारक है।

(7). नेतृत्व –कभी–कभी मतदाता मतदान व्यवहार हेतु किसी भी अन्य कारक की अपेक्षा नेतृत्व व व्यक्तित्व को प्राथमिकता प्रदान करते है। भारत मे प्रादेशिक स्तर पर भी ऐसे अनेक व्यक्तित्व व नेतृत्व हुए है जिन्होंने मतदान को प्राभावित किया है। ऐसी शासन व्यवस्थाओं ने नेतृत्व व व्यक्तित्व के मुद्दे पर ही प्रायः चुनाव होते है। परंतु संसदीय शासन व्यवस्था मे भी इसका महत्व

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, April 2024

कम नही है। इसके परिणामस्वरुप चुनावों में संबंधित राजनीतिक दलों को अपने–नेतृत्व व व्यक्तित्व के कारण पराजय का भी सामना करना पड़ता है।

(8). आयु लिंग –चुनाव में विभिन्न आयु वर्ग व लिंग आधारित मुद्दे मतदान व्यवहार को प्रभावित करते है। युवा, बुजुर्ग व स्त्रियाँ अपने–अपने व्यक्तित्व मुद्दों के आधार पर अपनी–अपनी मतदान प्राथमिकताएँ निर्धारित करते है। युवाओं के लिये शिक्षा व रोजगार के मुद्दे महिलाओं के लिये महिला सुरक्षा व संरक्षा के मुद्दे ; तथा वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण से संम्बंधित अनेक आश्वासन विभिन्न राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र में सम्मिलित किए जाते है। जिनका मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार व लिंग कारक मतदान व्यवहार पर प्रभाव डालता है। लोकसभा और विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में सदैव इस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

(9). सोशल मीडिया –समसामयिक निर्वाचन राजनीति मे इसका उपयोग दल और दलों के नेताओं के प्रति जनमानस की धारणाओं कों आकर्षित करने अथवा उसमें हेरफेर करने के लिये एक उपकरण के रूप में किया गया है। 2014–2019 के आय चुनाव के दौरान सोशल मिडिया ने राजनीतिक दलों और नेताओं के प्रचार अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण इस्तेमाल युवा वर्ग कर रहे है। और इसका लक्ष्य है कि मध्यम वर्गीय मतदाताओं को मत देने के पारंपरिक तरीकों का इस्तेमाल न किया जाये।

(10). परिवार –एवं नातेदारी –मतदान व्यवहार को प्रभावित करने मे परिवार एवं रिश्तेदारों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है प्राथमिक स्तर पर व्यक्ति के मतदान व्यवहार पर उसके परिवार और रिश्तेदारों का गहरा प्रभाव होता है अधिकांशतः यह देखने को मिलता है कि माता–पिता एवं घर के बुजुर्ग आदि जिस राजनीतिक दल के नेताओं से प्रभावित होते है उनके नक्ष मे मतदान करते है तो बच्चे भी उनके राजनीतिक दृष्टिकोण का अनुकरण करते है। आज शिक्षित मतदाताओं की राजनीतिक चेतना मे वृध्दि हो रही है।

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधार्थी का उद्देश्य**रीवा जिले के सेमरिया तहसील के ग्राम मोहरवा कोठार में महिलाओं के मतदान व्यवहार का अध्ययन है**। जिसमें कुल **100 उत्तरदाता** महिलाओं को निर्दशन पध्दति के द्वारा चयनित किया गया है। मतदान व्यवहार का अध्ययन करते हुए शोधार्थी के द्वारा महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता; मतदान/जागरुकता और मतदान करते समय कौन कौन कारकों से प्रभावित होकर मतदान करती हैं। यह जानने का प्रयास किया गया है। और उनसे प्रश्नोत्तर किया गया।उत्तरदाता महिलाओं से जब यह प्रश्न किया गया कि क्या आप मतदान करने जाती हैं? तो इस पर उनके उत्तर निम्न रहे हैं–

क्या आप मतदान करने जाती है ?

क.	विवरण	उत्तरदाता महिलाओं कि संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	90	90%
2.	नही	10	10%
	योग	100	100

उक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 90 प्रतिशत महिलाएं मतदान करने जाती है। और 10 प्रतिशत महिलायें मतदान नही कर पाती है। मतदान न करने का कारण पूछा गया तो पता चला कि मतदान केंन्द्र दूर था और आने–जाने की सुविधा नही थी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, April 2024

आप क्या देख कर मतदान करती है?

क्र.	विवरण	उत्तरदाता महिलाओं कि संख्या	प्रतिशत
1.	जाति	20	20%
2.	विकास	40	40%
3.	रोजगार	30	30%
4.	घोषण पत्र	10	10%
	योग	100	100

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 20 प्रतिशत महिलायें जाति के देखकर मतदान करती है; 40 प्रतिशत महिलायें विकास देखकर; 30 प्रतिशत महिलायें रोजगार देखकर एवं 10 प्रतिशत महिलायें घोषण पत्र पढ़कर मतदान करती है।

क्या आप किसी के कहने पर मतदान करती हैं;यदि हाँ तो किसके कहने पर?

क्र.	विवरण	उत्तरदाता महिलाओं कि संख्या	प्रतिशत
1.	परिवार	33	33%
2.	रिश्तेदार	23	23%
3.	राजनीतिक दल	27	27%
4.	अपनी इच्छा से	17	17%
	योग	100	100

उक्त तलिका से यह स्पष्ट किया जा सकता है. कि 33 प्रतिशत महिलाएं परिवार के कहने पर मतदान करती है। 23 प्रतिशत महिलाएँ रिश्तेदार के कहने पर 27 प्रतिशत महिलाएँ राजनीतिक दल के नेताओं के कहने पर मतदान करती है। एवं 17 प्रतिशत महिलाएँ अपनी इच्छा अनुसार मतदान करती है। इससे यह स्पष्ट किया जा सकता है कि महिलाएँ अभी भी सशक्त नही है कि खुद निर्णय ले सकें।

आपके अनुसार उम्मीदवार कितना शिक्षित होना चहिए?

क्र.	विवरण	उत्तरदाता महिलाओं कि संख्या	प्रतिशत
1.	10वीं	10	10%
2.	12वीं	15	15%
3.	स्नातक	35	35%
4.	स्नातकोत्तर	40	40%
	योग	100	100

इस तालिका से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि 10 प्रतिशत महिलाओं का जबाब 10वीं रहा। 15 प्रतिशत का 12वीं; 35 प्रतिशत का जबाब स्नातक रहा एवं 40 प्रतिशत महिलाओं का जबाब स्नातकोत्तर के लिए रहा। क्योंकि उनका कहना रहा कि उम्मीदवार जितना अधिक शिक्षित होगा जनता के लिए उतना ही अच्छा रहेगा; और समाज मे उतनी ही जागरुकता रहेगी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, April 2024

क्या महिला उम्मीदवार को वोट देना चाहिए?

क्र.	विवरण	उत्तरदाता महिलाओं कि संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	70	70%
2.	नहीं	10	10%
3.	कभी–कभी	20	20%
	योग	100	100

उर्पयुक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं का जबाब हाँ मे रहा। 10 प्रतिशत का जबाब न मे रहा एवं 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना रहा कि कभीक–भी महिला उम्मीदवार को वोट देना चहिए हमेशा नहीं।

सरकारके गठन निर्वाचन एवं सरकार से आपकी पहल क्या है?

अधिकांश महिलाओं का विचार था कि विकास कार्यों को सबसे पहले महत्त्व दें और हर क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता अधिक से अधिक बढ़ाने का प्रयास करे। और यह सरकारी प्रयास से होगा तो और भी अच्छा होगा।

निष्कर्ष–

मतदान की प्रकिया मतदाता के व्यवहार के व्यापक आयाम का एक पक्ष है। निर्वाचन लोकतंत्र की एक अनिवार्य किया है। मतदान व्यवहार के अध्ययन के दौरान शोधार्थी ने उत्तरदाताओं के माध्यम से यह जानने की कोशिस कि; की मोहरवा कोठार में महिलाओं का मतदान व्यवहार कैसा रहा? निष्कर्ष के दौरान यह ज्ञात हुआ कि मतदान बिना किसी लोभ लालच के किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र मे भी ज्यादा से ज्यादा मतदान किया जाता है। साथ ही यह भी देखने को मिला कि कुछ उत्तरदाता महिलाएँ विना किसी भेदभाव के मतदान करती है। कुछ प्रतिशत जातिवाद भी करती है। अभी भी ग्रामीण महिलाओं मे जागरूकता कि कमी है। अनेक ऐसे कारक है जो महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करते है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची–

[1]. भारत मे मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन; (श्री ललन कुमार पाण्डेय) सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर (बिहार)

[2]. डॉ. नन्दलाल एम.ए (इलाहाबाद), पी–एच०डी० काशी विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग समाज विज्ञान संकाय शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी पुस्तक प्रकाशक, खजूरी बाजार इंदौर

[3]. भारतीय लोकतंत्र मे मतदान व्यवहार व उसके विविध कारकः एक अध्ययन (संजय पाण्डेय) शोधार्थी, डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या उ•प्र•

[4]. https:@@www.drishtiias.com

[5]. Byjus.comf@ree-ias-Prep@voting behaviour